शिष्य-बनाने वाला सेवक

डेविड सर्वेन्ट की अन्य पुस्तकें

मसीह की अद्वितीय क्रूस

परमेश्वर के इस लेख को इतने समय की प्रतीक्षा करने के पश्चात् बताने के लिए मुझे क्षमा करें

शैतान और आत्मिक युद्ध के बारे में आधुनिक पौराणिक कथा

आपका सर्वश्रेष्ठ वर्ष अभी भी

बड़ा सुसमाचार छल

शिष्य बनाने वाला सेवक

फलवन्त व गुणन होने के बाइबल के सिद्धान्त

डेविड एस. सर्वेन्ट

एथनोस प्रेस
पिट्सबर्ग, पेन्नसिल्वेनिया

शिष्य-बनाने वाला सेवक
फलवन्त व गुणन होने के बाइबल के सिद्धान्त
द्वितीय प्रकाशन: जनवरी 2010

कॉपीराईट ' © 2005 द्वारा डेविड सर्वेन्ट। सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक का कोई भी भाग कॉपीराईट स्वामी की लिखित अनुमति के बिना पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता, सिवाय संक्षिप्त उद्धरणों के।

इस पुस्तक के सभी धर्मशास्त्रीय उद्धरण, सिवाय उनके जिन्हें कहीं और से लिया गया है, न्यू अमेरिकन बाइबल से हैं,' © 1960, 1962, 1963, 1971, 1972, 1973, 1975 और 1977, द लॉकमैन फाऊंडेशन, अनुमति द्वारा प्रयुक्त किये गए हैं।

शब्दाकंण .....

Printed by:
NEW LIFE PRINTERS PVT. LTD
B-3,4/B-4, Ansal Building, Commercial Complex,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Ph.: 9213996999, 9312639883,
E-mail: rajuvettikkal@gmail.com, rajuvettikkal@yahoo.com

इसे विश्व के उन सभी मसीही अगुवों को समर्पित किया गया है जिन्हें यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ उनके गांवों, शहरों और देश तक जाने की परमेश्वर-प्रदत्त उमंग दी गई है।

''और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं'' (1 पतरस 5:4)।

प्रस्तावना

मैं तीन पीढ़ी की विशेष स्त्रियों के प्रति अधिक धन्यवादी हूं : मेरी पत्नी–बेकी, उसके प्रूफरीडिंग कार्य व प्रोत्साहन के लिए, मेरी मां–इंगलिश मेजर लावर्ने सर्वेन्ट का प्रत्येक छोटी मोटी अनियमित्ता को ढूढ़ने और मेरी बेटी–चेरिटी का उसके आवरण पृष्ठ और प्रारूप हेतु निश्चय ही पुरुष का अकेला रहना अच्छा नहीं है।

विषय सूची

परिचय 8
एक सही लक्षय निर्धारित करना 11
दो सही तरह से आरम्भ करना 25
तीन उचित रूप से जारी रहना 44
चार गृह कलीसियाएं 56
पाँच कलीसिया का विकास 85
छह शिक्षा देने की सेवकाई 97
सात बाइबल की व्याख्या 126
आठ पहाड़ी उपदेश 153
नौ यीशु का पसंदीदा प्रचारक 195
दस नया जन्म 203
ग्यारह पवित्र आत्मा में बपतिस्मा 214
बारह सेवकाई में स्त्रियां 231
तेरह तलाक और पुनर्विवाह 247
चौदह विश्वास के मूलतत्व 272
पन्द्रह ईश्वरीय चंगाई 286
सोलह यीशु की चंगाई की सेवकाई 301
सत्रह आत्मा के वरदान 315
अट्ठारह सेवकाई के वरदान 330
उन्नीस मसीह में–वास्तविकताएं 354
बीस स्तुति और आराधना 361
इक्कीस मसीही परिवार 368
बाईस आत्मा द्वारा कैसे नेतृत्व होना है 379
तेईस धर्मविधियाँ 389
चौबीस मुकाबला, क्षमा और मेल 395
पच्चीस प्रभु का अनुशासन 411
छब्बीस उपवास 416
सत्ताइस जीवन–पश्चात् 424
अट्ठाईस परमेश्वर की अनन्त योजना 439
उनतीस कलीसिया का उठाया जाना और अन्तिम समय 453
तीस आत्मिक युद्ध के बारे में आधुनिक परिकल्पना, भाग 1 488
इकत्तीस आत्मिक युद्ध के बारे में आधुनिक परिकल्पना, भाग 2 532
बत्तीस भण्डारीपन 579
तैंतीस प्रचार कार्य के भेद 596
अन्तिम शब्द 616

परिचय

Introduction

पिछले पैंतीस वर्षों से, मुझे संसार के पचास देशों की यात्रा करते हुए तीन से पांच दिन की सभाओं में हज़ारों सेवकों से बात करने का अवसर मिला है। इन सभाओं में मसीह की देह में पाए जाने वाले भिन्न मतों के समर्पित मसीही अगुवों ने भाग लिया था। प्रत्येक यात्रा ने इस बात की पुष्टि की कि तीन से पांच दिन की सभाएं वर्तमान में पाई जाने वाली आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पर्याप्त नहीं थीं। मसीही अगुवों को तैयार करने के लिए बहुत कुछ किये जाने की ज़रूरत है, और यह पुस्तक उस एक कमी को पूरा करने का प्रयास करती है।

मुझे कलीसियाओं में बीस वर्ष के लगभग एक पास्टर के रूप में कार्य करने का सौभाग्य मिला है। यद्यपि कई तरह से मैं ''सफल'' रहा था, तौभी मैंने कई बार स्वयं को बाइबल सेवकाई के कुछ मूलतत्वों को न समझ पाने की कमी के कारण संघर्षों में पाया था। मुझे उन निष्कपट सेवकों की भी चिन्ता रहती है जिनके पास उस चीज़ की कमी है जिसकी कमी मुझ में थी और जिन्हें उस कार्य के लिए तैयार होने की ज़रूरत है जो उनके सामने रखा गया है। कुछ सिद्धान्त जिन्हें समझना मेरे लिये कठिन था, वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि एक बार उन्हें समझ लिये जाने पर वे सेवक के शेष जीवन में सेवकाई के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। वे ऐसे मानदण्ड बन जाते हैं जिससे सेवकाई के प्रत्येक पहलू को मापा जाता है। वे सिद्धान्त आरम्भ के अध्यायों में दिये गए हैं और किसी भी पाठक को उन्हें अनदेखा नहीं करना चाहिए, क्योंकि बाकी के सभी अध्याय व्यावहारिक रूप से अपने आधार के बिना बेकार हो जाते हैं।

यह पुस्तक विशिष्ट रूप से पास्टरों के कार्य करने के लिए है, क्योंकि निश्चय ही वे सबसे अधिक सामान्य मसीही अगुवे हैं, परन्तु मेरे द्वारा लिखी गई प्रत्येक चीज़ प्रचारकों, शिक्षकों, मिशनरियों, कलीसिया रोपकों, भविष्यद्वक्ताओं, सण्डे स्कूल कार्यकर्त्ताओं इत्यादि के लिये भी है। मसीह की देह में ऐसा कोई भी नहीं है जिसे इस पुस्तक को पढ़ने से लाभ नहीं होगा, क्योंकि मसीह की देह के प्रत्येक सदस्य को परमेश्वर प्रदत्त कार्य के लिए अनुग्रह दिया गया है।

मैंने प्रमुख रूप से उत्तरी अमेरिका, पश्चिमी यूरोप और आस्ट्रेलिया/न्यूज़ीलैण्ड के सेवकों के लिए इसे लिखा है। तथापि, इसका अर्थ यह नहीं है कि यह संसार के अन्य भागों के सेवकों के लिए किसी काम की नहीं है। निश्चय ही यह पुस्तक विचारणीय रूप से उनकी सहायता कर सकेगी, लेकिन उनके पास पहले से ही बहुत से शिक्षक हैं। अपने ज्ञान, अनुभव और सेवकाई पर निर्भर होते हुए, आप इन अध्यायों को अन्यों की तुलना में महत्वपूर्ण पाएंगे। उदाहरण के लिए चीन, क्यूबा और वियतनाम की बहुत सी गृह कलीसियाओं के पास्टर इस पुस्तक में ऐसा कुछ अधिक नहीं पाएंगे जिसे वे न जानते हों। तथापि, गृह कलीसियाओं से अपरिचित पास्टर इन अध्यायों को अत्यंत ही सहायक पाएंगे।

इस पुस्तक में दिये गए विषयों पर सभी पाठक सहमत हों, ऐसा संभव नहीं है। दस वर्ष पूर्व, इस पुस्तक में मैंने जो कुछ लिखा था उससे मैं सहमत नहीं था। अत: छोटी छोटी असहमतियों से स्वयं को उसे करने से न रोकने दें जिसे आप इन अध्यायों से सीख सकते हैं।

जिस तरह से यीशु ने हमें सिखाया, कोई भी नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं डालता नहीं तो पुरानी मशकें फट जाएंगी। केवल नई मशकें ही नई दाखरस को वहन कर सकती हैं। यद्यपि मेरे द्वारा लिखित कुछ चीज़ों को नई दाखरस के समान माना जा सकता है, वास्तव में यह पुरानी दाखरस है–पुराने नियम के समान पुरानी। अत: आगे दिये गए पृष्ठों में दाखरस के उण्डेले जाने पर पुरानी मशकों के फटने का कोई दोष नहीं है। यीशु इससे खुश हुआ कि परमेश्वर ने सत्य को ''ज्ञानियों और समझदारों'' से छिपाकर बालकों पर प्रगट किया है (मत्ती 11:25)। इसी तरह से, परमेश्वर दीनों पर अनुग्रह करता, परन्तु घमण्डियों का सामना करता है (देखें याकूब 4:6)। समस्त संसार के दीन मसीही अगुवों के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें। परमेश्वर इसे पढ़ने पर उन्हें आशीष दे।

–डेविड सर्वेन्ट